Digitization by eGangotri, Funding by Arya Samaj Foundation Chennai

वेदप्रकाश

का

श्रावणी विशेषांक

स्वाध्याय संग्रह

लेखक : वेद-शास्त्रज्ञ श्री स्वामी वेदानन्द तीर्थ

अगस्त मास में प्रकाशित होने वाला विशेषांक श्रावणी सप्ताह के अनुरूप ही लगभग २०० चुने हुए वेद मन्त्रों के शब्दार्थ तथा विनय सहित होगा।

इस अंक का मूल्य तीन रुपये होगा। तीन रुपये भेजकर इस ग्रन्थ-रत्न को आप रजिस्ट्री डाक से प्राप्त कीजिये। 'वेदप्रकाश' पत्रिका भी एक वर्ष तक निःशुल्क मिलता रहेगा।

गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पत्रिका के सम्बन्ध में

'वेदप्रकाश' पिछले १७ वर्षों से निकल रहा है। इसने आर्यजगत् में अपने अपूर्व विशेषांकों द्वारा अपनी धाक प्रारम्भिक वर्षों में ही जमा ली थी।

पिछले वर्ष से 'वेदप्रकाश' पत्रिका नि:शुल्क कर दी गई है। नववर्ष श्रावणी (अगस्त) अंक से आरम्भ होता है। श्रावणी पर एक विशेषांक प्रकाशित किया जाता है जिसका मूल्य तीन रुपये रजिस्ट्री डाकखर्च सहित होता है। जो इस विशेषांक को खरीद लेते हैं उन्हें वर्ष-भर तक 'वेदप्रकाश' प्रति-मासिक भेजा जाता है।

वर्ष के शेष ग्यारह अंक नि:शुल्क हैं। अंक न मिलने की शिकायत न लिखें क्योंकि पिछले अङ्क शेष नहीं रहते।

पता बदलने की सूचना समय पर अवश्य दें।

पत्र-व्यवहार करते समय ग्राहक-संख्या अवश्य लिखनी चाहिए अन्यथा पत्र पर ध्यान नहीं दिया जा सकेगा।

वेद-प्रवचन

लेखक : **गंगाप्रसाद उपाध्याय**

पुस्तक में ५३ मन्त्रों की विद्वत्ता-पूर्ण व्याख्या प्रस्तुत की गई है। समाजों में साप्ताहिक सत्संगों के अवसर पर पर भी ये पढ़कर सुनाए जा सकते हैं। प्रत्येक मन्त्र की व्याख्या ९-१० पृष्ठों में की गई है।

मूल्य ५-००

गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली

शंकर लेखमाला

लेखक : **रणवीर**

जब निराशा के अन्धकार में कुछ भी दिखाई न दे, जब विभिन्न धार्मिक विचारों के जंगल में कोई मार्ग न मिले, जब कर्तव्य और अकर्तव्य का निर्णय न हो पाए और खोजने पर भी शान्ति न मिले तब इस पुस्तक को पढ़िए, आपको आशा की नवज्योति, जीवन का नव-संदेश मिलेगा। मूल्य २-५०

गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ ओ३म् ॥

वेद प्रकाश

वर्ष १७ अङ्क ११ | संस्थापक—गोविन्दराम हासानन्द आषाढ़ २०२६, जुलाई १९६९ | वार्षिक मूल्य ३-००

सम्पादक : विजयकुमार आदरी सम्पादक : ब्र० जगदीश विद्यार्थी

वेद प्रवचन

★ स्व० गंगाप्रसाद उपाध्याय

उद् वयं तमसस्परि स्वः[1] पश्यन्त उत्तरम् ।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥

(ऋग्वेद १।५०।१०, अथर्ववेद ७।५३।७, यजुर्वेद २०।२१, २७।१०, ३५।१४, ३८।२४ ; तैत्तिरीय संहिता ४।१।७।४ ; तैत्तिरीय ब्राह्मण २।४।४।६ ; ६।६।४, तैत्तिरीय आरण्यक ६।३।२)

अन्वय : वयं तमसः परि (उपरि)[2] स्वः (ज्योतिः) पश्यन्तः सूर्यं उदगन्म । उत्तरं ज्योतिः अगन्म । देवत्रा (देवेषु) उत्तमं ज्योतिः पश्यन्तः देवं सूर्यं अगन्म ।

---

१. ऋग्वेद में 'ज्योतिः पश्यन्तः' ऐसा पाठ है । अन्यत्र "स्वः पश्यन्तः" ऐसा पाठ है । 'स्वः' और ज्योतिः पर्याय हैं । अर्थभेद नहीं ।

२. 'परि' का अर्थ है 'उपरि' । उकार का छान्दस लोप है । वेद में तीनों प्रकार के लोप मिलते हैं । (१) शब्द के पहले अक्षर का लोप जैसे उपरि के स्थान में परि । एकस्मै के स्थान में कस्मै ; (२) मध्य के अक्षर का लोप जैसे प्रेम्णा के स्थान में प्रेरणा ; (३) अन्त के अक्षर का लोप जैसे आप्राद् के स्थान में 'आप्रा' ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अर्थ : (वयं) हम लोगों ने (तमसः) पाप या अन्धकार से (परि) ऊपर उठकर (स्वः पश्यन्तः=ज्योतिः दृष्टवन्तः) प्रकाश को देखा और (देवं सूर्य्यं) परम प्रकाशक ईश्वर को (उद्+अगन्म) पा लिया। (उत्तरं) आगे बढ़कर देखा तो (उत्तरं ज्योतिः) अधिक तेजवाले प्रकाश को पाया। और आगे बढ़े तो (देवत्रा) हर प्रकाशक वस्तु में में व्यापक (उत्तमं ज्योतिः) सर्वोत्कृष्ट ज्योति अर्थात् परम-प्रभु की प्राप्ति हुई।

व्याख्या—तमसः परि=तम के ऊपर। 'तमस्' नाम है अँधेरे का और पापों का भी। मनुष्य का साधारण जीवन अन्धकार या पापों से आच्छादित रहता है। खाने-पीने और संसार के बखेड़ों में लिप्त मनुष्य को परमात्म-तत्त्व के दर्शन नहीं होते। हमको रोटी तो दिखाई देती है परन्तु रोटी में व्यापक ईश्वर नहीं दीखता। पानी दीखता है परन्तु पानी में व्यापक ईश्वर दिखाई नहीं देता। जब तक हमारी आँखों के समक्ष अन्धकार का गुबार छाया हुआ है, सूर्य के दर्शन नहीं होते। जब अधिक कुहरा पड़ता है तो चमकता हुआ सूर्य भी दिखाई नहीं देता। संसार के साधारण व्यवहार कुहरे के समान प्रकाश को आच्छादित करते हैं। लोगों से पूछो कि क्या इस संसार में 'आत्मतत्त्व' भी है? वह कहते हैं, "कहाँ है दिखाओ?" तुम कहते हो कि फूलों में ईश्वर व्यापक है। हम फूल की हर पंखड़ी को तोड़कर देखते हैं कहीं ईश्वर तो दृष्ट नहीं पड़ता। यदि ईश्वर प्रत्येक आँख को समान रूप में दिखाई पड़ जाता तो सभी मनुष्य समान रूप से आस्तिक और ईश्वर के श्रद्धालु होते और संसार में पाप, अन्धकार या क्लेश का नाम न होता। परन्तु ऐसी समान-दृष्टि हम सबको मिली नहीं। परमात्म-तत्त्व की बात तो दूर रही, साधारण भौतिक पदार्थ भी हम सबकी आँखों को समान स्पष्टता से प्रतीत नहीं होते। एक सुशिक्षित वैज्ञानिक एक छोटे-से पत्ते को देखकर उसमें जितने गुण देख सकता है, वे गुण साधारण बच्चे को तो नहीं दिखाई पड़ते। साधारण मनुष्य की अपेक्षा माली को आँख अधिक तेज है और साधारण माली की अपेक्षा वनस्पति-शास्त्र-विशारद वैज्ञानिक की। इससे एक बहुत बड़ी बात यह सिद्ध हुई कि 'आस्तिकता' जादू की भाँति सबको

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यकायक प्राप्त नहीं हो जाती। जैसे बच्चा एक-एक अक्षर पढ़ते-पढ़ते अन्त में परम विद्वान् हो जाता है इसी प्रकार आत्म-दर्शन का भी विकास होता है। इसकी भी कक्षायें हैं। यदि आप सुयोग्य गणितज्ञ बनना चाहते हैं तो छूमंतर से गणित का ज्ञान न होगा। एक और एक दो से लगाकर सैकड़ों मंजिलें तय करनी पड़ेंगी तब कहीं जाकर आप गणित की उच्च कक्षा तक पहुँच सकेंगे। किसी विद्यार्थी के जीवन पर सावधानी के साथ दृष्टि डालिये। उसके क्रमशः विकास की परिगणना कीजिये। यदि गणित एक दिन में नहीं आता, यदि लिखना-पढ़ना एक दिन में नहीं आता, यदि रोटी पकाना एक दिन में नहीं आता, यदि कपड़ा बुनना एक दिन में नहीं आता, तो यह कैसे सम्भव है कि इधर-उधर के दो भजनों को गा लेने या दो-चार उपदेशों को सुन लेने से आप आस्तिकता जैसी सर्वोत्कृष्ट विद्या के धनी बन जायँ। वर्तमान वेदमंत्र में क्रमशः इसी विकास की ओर संकेत किया गया है।

"तमसः परि" पापों से ऊपर उठकर। किसी माघ के दिन प्रातःकाल उठकर देखिये। सवेरा हो गया। सूर्योदय को हुए दो घण्टे हो गये, परन्तु सूर्य चमकते हुए भी दिखाई नहीं पड़ता। चारों ओर कुहरा छाया हुआ है। यह नहीं कि सूर्य न निकला हो। परन्तु कुहरे ने हमारी निगाह को कुण्ठित कर दिया है। उसी समय यदि आप किसी ऊँची पहाड़ी पर चढ़ जायँ तो देखेंगे कि सूर्य चमक रहा है। क्यों? इसलिये कि आप कुहरे से ऊपर उठ गये। पूना से बम्बई जाते हुऐ जब रेलगाड़ी ऊँचाई पर चढ़ती है तो ऐसा प्रतीत होता है कि गाड़ी ऊपर है और बादल नीचे मँडला रहे हैं, क्योंकि आप उस स्तर से ऊँचे उठ गये जहाँ बादलों का अँधेरा था। जो बात भौतिक प्रकाश पर लागू होती है वही मानसिक और आध्यात्मिक ज्ञान पर भी लागू होती है। निरक्षर पुरुष को किताबों के पृष्ठ ऐसे प्रतीत होते हैं मानो किसी ने स्वच्छ कागज पर रोशनाई फैला दी हो। परन्तु जब मनुष्य निरक्षर से साक्षर होने लगता है तो अक्षरों की एक-एक रेखा अपूर्व ज्ञान का द्योतक होती है, क्योंकि शिक्षार्थी अन्धकार से ऊपर उठ जाता है।

इस क्रमिक विकास के लिये वेद में तीन सुन्दर शब्द दिये हैं—उत्, उत्तर, उत्तम। यह तरप् और तमप् (Comparative and Superlative) का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रयोग सारगर्भित है। इसमें एक बहुत बड़ा रहस्य छिपा है। ईश्वर के दर्शन के इच्छुक को 'तमसः परि' अन्धकार या पापों से ऊपर उठना चाहिये। योगदर्शन में अष्टांग योग का वर्णन आता है। योग कुछ साधारण श्वास-प्रश्वासों के नियंत्रण या शारीरिक आसनों का नाम नहीं है। बहुत-से नट ऐसे विचित्र आसन करते हुए देखे जाते हैं कि आश्चर्य होता है कि उन्होंने अपने शरीर के प्रत्येक अंग पर कैसे आधिपत्य प्राप्त कर लिया। परन्तु वह योगी तो नहीं। वह आस्तिक्य, आत्मदर्शन या तत्त्वज्ञता में तो सर्वथा कोरे हैं। योग के आठ अंगों में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह वाला जो पहला अङ्ग है वह तो अन्धकार और पापों से ऊपर उठने के ही लिये है। "पाप्मा वै तमः पाप्मानं एव अस्माद् अप हन्ति" (तैत्तिरीय संहिता ५।१।८-६)। अहिंसा और सत्य की प्राप्ति क्षण-भर में तो नहीं होती। जो अपने को साधु कहते हैं या जिनको संसार साधु कहता है उनको भी अहिंसा और सत्य की उपादेयता में सन्देह रहता है। जो लोग रात-दिन शास्त्रों में सत्य और अहिंसा के उपदेश सुनते और उनके आधार पर प्रतिदिन दूसरों को उपदेश देते हैं वह भी यह कहते सुने जाते हैं कि सत्य और अहिंसा का सहारा लेकर तो कुंजड़ा शाक-भाजी बेचने में भी सफल नहीं हो सकता, बड़ी-बड़ी योजनाओं की बात तो दूर रही। महात्मा गांधी ने अपने सत्य और अहिंसा के परीक्षणों का उल्लेख करते हुए लिखा है कि मैंने यह सब लिखने की कोशिश इसलिये की है कि जिनको सत्य और अहिंसा की उपयोगिता में शंका है उनमें कुछ श्रद्धा उत्पन्न हो जाये। योग और योगियों के पीछे दौड़ने वाले संसार में भरे पड़े हैं। बड़े-बड़े सेठ और सेठानियाँ नित्य ऐसे योगियों की खोज में रहते हैं जो धन की प्राप्ति का कोई सरल लटका बता सकें। वे योग के इच्छुक नहीं हैं। वे हिंसा और असत्य के तमस् या अन्धकार से ऊपर उठना भी नहीं चाहते फिर उनको 'सूर्य्यं उदगन्म' अर्थात् प्रभु के प्रकाश की झाँकी कैसे मिले। हाँ! यदि वे ऐसा अभ्यास डालें कि उनके जीवन से पाप की प्रवृत्तियाँ दूर हो जायँ तो उनकी निगाह ऊँची उठ सकती है, और कम-से-कम दूर से यह दिखाई पड़ जाता है कि किसी पहाड़ की चोटी पर सूर्य चमक रहा है। सूर्य का अभाव नहीं है। हमारे सिर पर न चमके न

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सही। दूसरों के सिर पर चमकता है। यह पहाड़ की चोटियाँ क्या हैं? महात्माओं के जीवन। वे हमको सांसारिक "तमः-पुञ्ज" से ऊपर उठे दिखाई पड़ते और हमको अपनी ओर बुलाते हैं कि ऊपर को आँख उठाओ और शनैः-शनैः पहाड़ी पर चढ़ते चले आओ।

Lives of great men, all remind us,
We can make our lives sublime.
(Long Fellow's Psalm of life)

महात्माओं के जीवन हमको स्मरण दिलाते हैं कि हम भी अपने जीवनों को उत्कृष्ट बना सकते हैं।

कब?—जब कि हम "स्वः पश्यन्तः"। स्वर्ग अर्थात् ऊपर की ओर देखें। 'स्वः' का अर्थ यहाँ कोई विशेष स्थान नहीं। विषय-वासनाओं के कुहरे से उठते ही आत्मा को प्रकाश की प्राप्ति होने लगती है। सम्राट् अशोक का जीवन पापमय था; उसने मानव-संहार में कोई कसर उठा नहीं रक्खी। यकायक उसकी आँख उस अन्धकार से ऊपर उठ गई और उसको एक ऐसी ज्योति की किरण दिखाई दी कि उसका जीवन बदल गया। उसको सत्य और अहिंसा पर श्रद्धा हो गई। इसी प्रकार जब आपको प्रकाश की किरण सूझ पड़े तो उससे सन्तुष्ट न हूजिये। आगे अभ्यास करते जाइये। जब आप उत्तरोत्तर उन्नति करेंगे तो आत्मप्रकाश के भी अधिक दर्शन होंगे। हर एक बात अभ्यास से आवेगी। पूर्ण अभ्यास होने पर "देवत्रा देवं पश्यन्तः" हर देव में परमात्मदेव के दर्शन हो जाते हैं। यह पराकाष्ठा है।

'देवत्रा' 'देव मनुष्य पुरुष पुरुमर्त्येभ्यो द्वितीयासप्तम्योर्बहुलम्' (पाणिनि सूत्र ५।४।५६) यहाँ 'त्रा' प्रत्यय सप्तमी विभक्ति के अर्थ में है। 'देवत्रा' का अर्थ हुआ "देवों में।" देव अर्थ है प्रकाशवान पदार्थ का। देव तो बहुत-से हैं। सूर्य चमकता है अतः देव है। चन्द्र चमकता है अतः देव है। बिजली चमकती है अतः देव है। अग्नि चमकती है अतः देव है। जुगनू चमकता है अतः देव है। बिजली का दीपक चमकता है अतः देव है। गैस का हंडा चमकता है अतः देव है। मिट्टी का टिमटिमाता दीपक भी देव है क्योंकि यह चमकता है। आपकी आँख चमकती है अतः देव है। उल्लू

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की आँख चमकती है अतः देव है। चींटी की आंख चमकती है अतः देव है। परन्तु इन सब देवों से बड़ा और इन सबका मूलाधार परमात्मा महादेव है जो "उत्तमं ज्योतिः" सबसे बड़ी ज्योति है। पापरूपी अन्धकार से उठकर जब मनुष्य का हृदय स्वच्छ होने लगता है तो जो प्रकाश पहले धुंधला-सा दिखाई पड़ता था वह अधिक स्पष्ट हो जाता है, और हम अनुभव करने लगते हैं कि जहाँ और ज्योतियाँ छोटी-छोटी थीं वहाँ परमात्म ज्योति सबसे बड़ी और सबसे उत्तम है। और समस्त अन्य ज्योतियाँ उसी बड़ी ज्योति के आधार पर प्रकाशित हैं। उपनिषद् कहती है :—

न तत्र सूर्य्यो भाति, न चन्द्रतारकं
नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः ।
तमेव भान्तमनुभाति सर्वं
तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ॥

(मुण्डक उपनिषद, मुण्डक २, खण्ड २, मं० २०)

परमात्म-प्रकाश में सूर्य का प्रकाश काम नहीं देता, न चाँद का, न बिजली का, न इस भौतिक अग्नि का। जब परमात्म-प्रकाश चमकता है तो यह सब अन्य प्रकाशक पदार्थ उसी के द्वारा चमकने लगते हैं। समस्त जगत् उसी एक प्रकाश से प्रकाशित है।

सूर्य को देखने के लिए कोई दीपक नहीं जलाता। दीपक में भी सूर्य की ही रोशनी है। इसी प्रकार परमात्मा की उत्तम ज्योति के प्रकाशित होने पर समस्त संसार प्रकाशित हो जाता है।

इस्लाम धर्म के कथानकों में एक कथानक ऐसा ही आता है जिससे ज्ञात होता है कि आस्तिकता का भाव क्रमशः उन्नति करता है। कहते हैं कि अन्धेरी रात में एक तारा दिखाई दिया। मनुष्य ने समझा, यह बड़ा चमकदार है; यही संसार का मालिक होगा। वह कहने लगा, "हाजा रब्बी" (यही मेरा ईश्वर है)। थोड़ी देर में तारा डूब गया और चाँद निकल आया। तब उसके जी में आया कि वह तारा ईश्वर नहीं। ईश्वर कभी डूबता नहीं। तारे से अधिक प्रकाश तो चांद का है। इसलिये चाँद के प्रति सम्बोधन करके उसने कहा, "हाज़ा रब्बी" (यही मेरा ईश्वर है)। चाँद भी डूब गया और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सूर्य निकला। उपासक के मस्तिष्क में उसी प्रकार की फिर तर्कना हुई और उसने सूर्य के प्रति वही भाव प्रकट किये जो तारे के लिए किये थे। "हाज़ा रब्बी" (यही मेरा ईश्वर है) परन्तु सूर्य को डूबते देखकर वह अज्ञान भी दूर हो गया और वह सोचने लगा कि ईश्वर वही है जो कभी अस्त न हो और जिसके सहारे ही समस्त देव देदीप्यमान होते हों।

संसार में करोड़ों ऐसे मनुष्य हैं जो हर चमकते पदार्थ को ईश्वर समझ बैठते हैं। आकाश में जब कभी कोई नया तारा दिखाई पड़ता है तो ग्राम के मूर्खों में उसके लिए भक्ति-भाव उत्पन्न हो जाता है। तारों की उपासना उसी अविद्या का परिणाम है। परन्तु जैसे अविद्या मिटती जाती है मनुष्य असली मालिक का अनुभव करने लगता है।

संसार भर के ईश्वर-उपासकों के इतिहास पर विचार कीजिए। पता चलेगा कि सब एक ही स्तर पर नहीं हैं, क्योंकि सबका विकास एक-सा नहीं है। अँधेरी रात के पश्चात् जब उषाकाल आता है तो प्रकाश की एक धीमी-सी रेखा प्रतीत होती है। वह सूर्य की किरण नहीं है; उसका आभास-मात्र है। परन्तु शनैः-शनैः वही रेखा अधिक होने लगती है और जब सूर्य निकलता है तो सारा जगत् प्रकाशित हो जाता है। इसी प्रकार जब बच्चा सुनता है कि कोई ईश्वर जैसी चीज़ भी है तो उसको आश्चर्य होता है कि वह ईश्वर कैसा है जिसे हम आँखों से नहीं देख सकते? उसको बताया जाता है कि ईश्वर ऊपर है। वह अपनी आँख उठाकर आसमान की ओर ताकने लगता है। बच्चों से पूछो कि ईश्वर कहाँ है तो वे हाथ ऊपर को उठा देते हैं। कोई कहता है कि बादलों में ईश्वर है। कोई कहता है बादलों के ऊपर है। अंग्रेज़ी बाइबिल में एक शब्द आता है "माई फ़ादर इन हैविन" (My father in heaven) इसका अर्थ हुआ कि 'मेरा बाप जो स्वर्ग में है।" स्वर्ग के लिए "हैविन" कहा। अंग्रेज़ी में "हीव" (heave) का अर्थ है ऊपर को उठना। लोगों ने समझा कि यह जो ऊपर उठा हुआ दिखाई पड़ता है अर्थात् आकाश, यही हैविन है और हमारे परम-पिता उसी हैविन में रहते हैं। वस्तुतः यह बात है नहीं। ऊपर उठने का अर्थ है "तमसस्परि" या "तमसः उपरि।" पापों से ऊपर उठना। ईश्वर का प्रकाश उसी हृदय में अधिक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चमकता है जिसमें पापों का अन्धकार कम हो गया है। मैले दर्पण में तो सूर्य की किरण का आभास नहीं पड़ता। इसी प्रकार जिस हृदय में पापों का अन्धकार आच्छादित रहता है उसमें आत्म-प्रकाश की किरणें चमक नहीं पातीं। जब दर्पण निर्मल होता है तभी उपासक कहने लगता है—त्वमेव प्रत्यक्षम्। त्वमेव प्रत्यक्षम्। ओहो! तू तो प्रत्यक्ष है। जब तक अँधेरा था तुझे देख नहीं पा रहा था। जब मेरी आँख की ज्योति बढ़ी तो तू नज़र आने लगा।

आस्तिक भावों की उन्नति भी क्रमशः होती है और अभ्यास से होती है। यही इस मंत्र का रहस्य है।

★

गोरक्षा परम-कर्तव्य और गोहत्या महा-पाप

[लेखक—श्री पण्डित धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति]
(भूतपूर्व मन्त्री, सार्वदेशिक धर्म आर्य-सभा, दिल्ली)

देहली की एक गन्दी पत्रिका में एक विवेकशून्य लेखक ने पिछले दिनों कुछ गोहत्या-पोषक लेख लिखे थे। उन्हीं गन्दे, भद्दे, मिथ्या और सहृदय-संसार के हृदय को पीड़ित करने वाले लेखों का युक्तियों और प्रमाणों से युक्त, मुँहतोड़ उत्तर इस पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है। यह पुस्तक प्रत्येक आर्य घर, मन्दिर और पुस्तकालय में अवश्य ही रहनी चाहिए। न जाने कब आवश्यकता आ पड़े। प्रचारार्थ मूल्य बहुत कम है। अर्थात् एक प्रति आठ आने। बारह प्रति चार रुपये। डाक-व्यय पृथक्।

प्राप्तिस्थान—गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क, दिल्ली।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सुख कहाँ ?

★ माता मानकौर

ओ३म् ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ॥

वेद भगवान् कहते हैं :—'हे मनुष्य ! ये संसार की वस्तुएँ जिनमें भगवान् निवास करते हैं तथा जो जड़-जंगम पदार्थ हैं, उन पदार्थों को निष्काम भाव से भोग, लोभ मत कर ।' भगवान् का यही आदेश है कि लोभ मत कर, लोभ ही मनुष्यों को डुबो देता है, लोभ ही मनुष्यों को पापों में फँसा देता है अतः हमें स्वार्थ को त्याग कर परमार्थ में लगे रहना चाहिये । यह सांसारिक वस्तुएँ हमारी नहीं हैं, यह तो उसी परमेश्वर की हैं । इन वस्तुओं को हमें अपनी नहीं समझनी चाहियें, अपनी समझने से ही तो दुःख होता है । यदि हम इन्हें अपनी न समझें तो हमें किसी भी प्रकार का कष्ट प्राप्त न हो । दूसरों की वस्तु के खो जाने से इतना कष्ट नहीं होता जितना कि अपनी वस्तु के खो जाने से होता है । अतः हमें सांसारिक वस्तुओं से अधिक लगाव नहीं रखना चाहिये । लगाव तो इतना होना चाहिये जितनी प्रभु की आज्ञा हो । यदि हम इन वस्तुओं में फंस गए तो दुःख ही प्राप्त होगा, सुख नहीं । हमें तो संसार में इस प्रकार रहना चाहिये जिस प्रकार भौंरा पुष्प का रस भी लेता रहता है एवं पुष्प को धब्बा भी नहीं लगाता; इसी प्रकार हमें जग में रहते हुए भी जग से अलग रहना चाहिये क्योंकि सांसारिक वस्तुओं के अपना समझने से हमें छोड़ते समय महान् कष्ट एवं दुःख होगा, जिसे कि हम सह न सकेंगे । अतः हमें त्याग की वृत्ति अपनानी चाहिये । त्याग में सुख है एवं लोभ में दुःख ।

एक दृष्टान्त भी है कि एक राजा था जिसका नाम था मायादास । उसे सोने से इतना प्रेम था कि वह चाहता था कि उसके पास सब राजाओं से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अधिक सोना हो। वह प्रतिदिन अपनी मोहरें गिनता था तथा सोचता था कि प्रतिदिन कितनी बढ़ती हैं। वह सारा दिन यही सोचता रहता था।

एक दिवस रात्रि के समय वह अपनी मोहरें गिन रहा था तब उसे रोशनी दिखाई दी। मायादास आश्चर्यचकित हो गया कि प्रकाश कहाँ से आया। तब राजा ने देखा तो उसे एक बालक दिखाई दिया। मायादास ने उससे पूछा—'हे बालक ! तू कहाँ से आया है ? बालक ने कहा—'जहाँ यह प्रकाश होगा वहीं मैं हूँगा, बताइये आप क्या चाहते हैं।' राजा ने उत्तर दिया—"मैं जिस वस्तु को स्पर्श करूँ वह सोने की हो जाए, मेरे महल सोने के हो जाएँ तथा चारों ओर फव्वारे हों।" बालक ने कहा—"ऐसा ही होगा" बालक यह कहकर अन्तर्धान हो गया। जब राजा प्रातःकाल सोकर उठा तो वह बहुत आनन्दित था। वाटिका में गया, पौधों को स्पर्श किया तो वे भी सोने के बन गये। जिस वस्तु को स्पर्श करता वह सोने की बन जाती। राजा अतीव प्रसन्न हुआ। राजा ने जब लड़की को प्यार किया तो वह सोने की बन गई। भोजन तथा जल तक सब कुछ सोने का बन गया। अब राजा रोने लगा। अब उसे होश आया कि लोभ ही सबसे बुरा है। त्याग में ही सुख है। त्यागी का लोग मान करते हैं।

अतः वेद भगवान् कहते हैं—'हे मनुष्य ! तू इन वस्तुओं को त्याग भाव से भोग, इनमें लिप्त न हो। जिस प्रकार कमल का फूल पानी में रहता हुआ भी पानी से अलग रहता है। पानी उसे छूता तक नहीं। यदि वह जल में डूब जाये तो वह गल जाए तथा उसकी सत्ता समाप्त हो जाए। अतः मनुष्य को इसी प्रकार रहना चाहिये। मनुष्य को संसार में रहते हुए भी संसार से अलग रहना चाहिये, संसार में लिप्त नहीं होना चाहिये।

जो व्यक्ति संसार के विषयों रूपी कीचड़ में फँस जाते हैं वे कष्ट सहते हैं। जब वे संसार से जाने लगते हैं तो उन वस्तुओं देख-देखकर रोते हैं। यही तो रोना है। यह धन किसी के साथ नहीं जाता, सबको यहीं छोड़ना पड़ता है। जो सुख त्याग में है वह किसी वस्तु में भी नहीं है, अतः हमें त्याग सीखना चाहिये। स्वामी दयानन्द जी ने अपनी लाखों की सम्पत्ति को ठोकर

[शेष पृष्ठ १४ पर [

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(व्यक्तित्व निर्माण)

[शेष पिछले अंक का]

व्यक्तित्व के पूर्ण विकास के लिए यह आवश्यक हैं कि हमको अपने शरीर, मन और आत्मा के सम्बन्ध में अधिक-से-अधिक वैज्ञानिक ज्ञान हो, हम किसी एक क्षेत्र के परिमित ज्ञान से सन्तुष्ट न हो जाएँ। जीवन के सभी क्षेत्रों, सभी अंगों और विश्व के सम्बन्ध में, मन के सम्बन्ध में, और आत्मा के सम्बन्ध में अधिकाधिक ज्ञान प्राप्त करते रहे तथा विचार करते रहें। पूर्ण सत्य की खोज में रहें, और जहाँ से भी जितना प्रकाश मिले प्राप्त करते रहें। हमारे मस्तिष्क और हृदय की सभी खिड़कियाँ खुली रहें और समस्त अनुभव को संयुक्त रूप से समझने का प्रयत्न करते रहें। अनुभव के किसी अंश की अवहेलना न करें और अनुभव के क्षेत्रों तथा उसकी गहराई और विस्तार को बढ़ाते रहें। प्रत्येक मनुष्य को अपने विज्ञान और स्वतन्त्र विचार द्वारा प्राप्त ज्ञान के अनुसार अपना व्यक्तित्व और सामाजिक जीवन का निर्माण करना चाहिए। शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, आध्यात्मिक स्वास्थ्य और बल का सम्पादन करते रहना चाहिए। यह तभी हो सकता है जबकि वह वस्तुस्थिति को ठीक समझकर अपने को तदनुसार प्रवृत्त करे ; अपने पुरुषार्थ और प्रयत्न द्वारा अनुचित व्यवहार का त्याग करके उचित व्यवहार को ग्रहण करता रहे। अपने प्रति जैसा दूसरों से व्यवहार मनुष्य चाहे वैसा ही दूसरों के प्रति करने का प्रयत्न करे। अपने प्रति दूसरों से जो नहीं चाहता वह दूसरों के प्रति न करे। प्राकृतिक जगत् और समस्त विश्व के साथ सामंजस्य, सहयोग और प्रेम के साथ रहना सीखे। विश्व को चलाने वाली तथा अपने शरीर और जीवन का सृजन और नियन्त्रण करने वाली अज्ञात-शक्तियों के प्रति श्रद्धा रखता हुआ और प्रेरणा लेता हुआ आनन्द उत्साह से पूर्ण रहकर आह्लाद से जीवन को उन्नत करता चला जाए, यथासमय, यथावसर उचित व्यवहार करना सीखे।

यह बात अच्छी तरह समझकर कि हमारे व्यक्तिगत जीवन को चलाने और स्वस्थ और स्थिति रखने के लिये हमको बाहर से और दूसरों से कितना मिलता है इसके बदले में भी हमें कुछ-न-कुछ देना ही चाहिए। प्रकृति का ऋण, समाज का ऋण, वैज्ञानिकों का ऋण यदि हम नहीं चुकायेंगे, तो हमारा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जीवन उन्नत नहीं हो सकेगा। ऐसा समझकर प्रत्येक व्यक्ति को अपनी अवस्था, शक्ति, स्थान, योग्यता और रुचि के अनुसार विश्व की, समाज की, और विज्ञान की कुछ-न-कुछ सेवा करनी ही चाहिये। इस प्रकार के योग को यदि हम कोई नाम दे सकते हैं तो उसको जीवन-कला योग कह सकते हैं। ऐसे योगियों के कुछ लक्षण योग वाशिष्ठ महारामायण के शब्दों में इस प्रकार हैं—

मनोज्ञमधुराचाराः प्रियपेशलवादिनः
विवेचितारः कार्याणां निर्णेतारः क्षणादपि
अनुद्वेग कराचारा बान्धवा नागरा इव।
बहिः सर्वसमाचारा अन्तः सर्वार्थशीतलाः॥

अर्थात् वे दूसरों के मन के भावों को जानकर लोकप्रिय व्यवहार करते हैं और उचित और मधुर वाणी बोलते हैं। वे क्षणभर में कार्यों का विवेचन और निर्णय कर लेते हैं। वे नागरिकजनों के समान आचरण वाले और सबके बन्धु होते हैं। बाहर से तो वे सब काम करते हुए दिखाई पड़ते हैं, लेकिन भीतर सब प्रकार से शान्त रहते हैं। —'प्रसारिका' से

[शेष पृष्ठ १२ का]

मार दी। देश-देशान्तर घूमे, संसार का उपकार किया। उन्हें कितना ही लालच दिया परन्तु वे बिल्कुल भी अपने पथ से विचलित नहीं हुए। इसी-लिए हम उन्हें अब तक स्मरण करते हैं। महात्मा गांधी ने कितना त्याग किया! यहाँ तक कि तन के कपड़े तक उतार दिये। वे कहते थे—'मेरे देश-वासियों को तन ढकने को कपड़ा न मिले, खाने को अन्न न मिले तो क्या मैं बढ़िया वस्त्र पहनूँ तथा बढ़िया भोजन खाऊँ? नहीं, कदाचित् नहीं।' उन्होंने महान् त्याग किया। उनका कितना यश एवं मान है! उन्हें कोई नहीं भूल सकता। यदि हम चाहते हैं कि सब लोग हमें स्मरण करते रहें तो हमें भी कुछ कर दिखाना है। त्याग सीखना चाहिये। इसी में हमारा कल्याण है, धन जोड़ने में सुख नहीं, लोभ में सुख नहीं, किसी के अधिकारों को छीनने में सुख नहीं। वास्तविक सुख तो केवल त्याग में है, शेष वस्तुएँ तो यहीं का ही पसारा हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सूरज उगेगा ही !

★ विद्यानन्दन 'राजीव'

डगर पर तुम अकेले हो अँधेरी रात है तो क्या,
तुम्हारी साधना के घर कभी सूरज उगेगा ही !

उठाया है कि जिस संकल्प से पहला कदम तुमने,
कहीं उस आश का आँचल व्यथा से नम न हो जाये,
कहीं थक कर तुम्हारी वन्दना के स्वर न सो जायें,
तुम्हारी आरती की लौ कहीं पर कम न हो जाये ।

सजी पथ पर उदासी की खड़ी बारात है तो क्या,
तुम्हारे द्वार खुशियों का कभी मेला लगेगा ही !

निडर हो जगमगाता यह सलोना दीप माटी का,
तिमिर के तन्त्र को आलोक की खुल कर चुनौती है,
प्रबल आँधी कि अपने साथ जो तूफान लाई थी,
लहर बन कर वही बहती तरी के पाँव धोती है ।

तुम्हीं पर आज विघ्नों का कठिन आघात है तो क्या,
तुम्हारी कामना के भाल पर सेंदूर लगेगा ही !

शिथिल कर मोह के बन्धन, चढ़ा कर वक्ष पर चन्दन,
विरोधों के उदधि आकर कि जो गहरे उतरता है,
वही लाकर धरा की मोतियों से गोद भरता है,
उसी का केतु जय के द्वार पर जाकर फहराता है ।

तुम्हारे नयन सावन की घिरी बरसात है तो क्या,
सिसकती वेदना के घर कभी उत्सव मनेगा ही !

—❀—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रार्थना

(श्री रामकृष्ण परमहंस जी)

किसी ने श्री रामकृष्ण परमहस से पूछा—"प्रार्थना किस प्रकार होनी चाहिए—मौनपूर्वक अथवा उच्च स्वर से ?"

उन्होंने उत्तर दिया—"जिसकी जैसी इच्छा हो वैसी प्रार्थना कर सकता है। ईश्वर तो एक चींटी के भी चलने की आवाज सुनता है। बहुत ही धीरे रोओ तो वह सुन तो लेता ही है।"

"क्या प्रार्थना से कोई लाभ होता है ?"

"हृदयपूर्वक हो तो प्रार्थना अवश्य लाभदायक होती है; मुँह से हम कहते रहें "हम तुम्हारी शरण आए हैं, तुम जो चाहो सो करो" और उसी समय मन किसी-न-किसी वस्तु के ध्यान में लगा रहे तो वैसी प्रार्थना ढोंग है। प्रार्थना करते समय अपने-आपको धोखा मत दो। ईश्वर को झूठी बात मत सुनाओ। पवित्र विचारों के साथ प्रार्थना करो। तुम्हारी प्रार्थना वह अवश्य सुनेगा। ईश्वर तुम्हें बहुत ही प्यार करता है। अपने कर्तव्यों का अच्छी तरह पालन करने के बाद सर्वस्व उसके ऊपर छोड़ दो। चिन्ता दूर करो।

प्रार्थना-दीप

[लेखक—नित्यानन्द वेदालंकार एम० ए०]

सवा दो सौ पृष्ठों की इस पुस्तक में अनेक प्रार्थनाएं दी गई हैं। सभी विद्वानों ने इसकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है श्री पं० सातवलेकर जी लिखते हैं—"प्रार्थना-दीप पुस्तक को जो पढ़ेगा, वह इसकी प्रशंसा किए बिना न रहेगा क्योंकि इसमें विद्वानों, साधारण पुरुषों, स्त्रियों तथा विद्यार्थियों सबके लिए उपयुक्त सामग्री विचारपूर्वक एकत्र की गई है।" सुन्दर आवरण, बढ़िया कागज, मोती-सी छपाई। मूल्य दो रुपये

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारी प्रकाशित व प्रसारित पुस्तकें

महात्मा आनन्द स्वामी कृत

तत्त्वज्ञान	३-००
प्रभुदर्शन	२-५०
प्रभुभक्ति	१-५०
आनन्द गायत्री कथा	०-७५
एक ही रास्ता	१-००
शंकर और दयानन्द	०-५०
सत्यनारायण व्रत कथा	०-७५
भक्त और भगवान	१-००
मानव जीवन गाथा	१-००
उपनिषदों का सन्देश	१-५०
घोर घने जंगल में	२-५०
महामन्त्र	१-२५
सुखी गृहस्थ	१-००
बोध कथाएँ प्रथम भाग	१-५०
बोध कथाएँ द्वितीय भाग	१-५०
बोध कथाएँ दोनों भाग एक जिल्द में	३-५०

ब्र० जगदीश विद्यार्थी कृत

विद्यार्थी लेखावली	३-००
दयानन्द सूक्ति और सुभाषित	४-००
वैदिक प्रश्नोत्तरी	२-००
वेद सौरभ	२-००
ईशोपनिषद्	२-००
वैदिक उदात्त भावनाएँ	२-००
कुछ करो कुछ बनो	२-००
मर्यादा पुरुषोत्तम राम	१-५०
विद्यार्थियों की दिनचर्या	१-५०
दिव्य दयानन्द	१-२५
प्रार्थना प्रकाश	१-२५
प्रभात वन्दन	१-२५
हास्य विनोद	१-००
विष्णु पुराण की आलोचना	०-४०
राधा स्वामी मत दर्पण	०-२५
ऋग्वेद शतकम्	१-००
यजुर्वेद शतकम्	१-००
सामवेद शतकम्	१-००
अथर्ववेद शतकम्	१-००

महर्षि दयानन्द कृत

आत्मकथा	०-४०
स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश	०-१०
वेदान्तिध्वान्त निवारण	०-१६
वेदविरुद्ध मत खण्डन	०-३७
शिक्षापत्रीध्वान्त निवारण	०-३७
आर्याभिविनय	०-७५
आर्योद्देश्यरत्नमाला	०-१०
ऋग्वेद भाष्य का प्रथम सूक्त	०-२५
भ्रान्ति निवारण	०-२७
व्यवहारभानु	०-२५
भ्रमोच्छेदन	०-१५
गोकरुणानिधि	०-२०
गृहस्थाश्रम	०-६२
काशी शास्त्रार्थ	०-२०
सत्यधर्म विचार	०-२५

गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क, दिल्ली-६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारी प्रकाशित व प्रसारित पुस्तकें

आर्यसमाज के नियमोपनियम	०-१०
ईशोपनिषद्	०-२५
बालशिक्षक	०-३०
यजुर्वेदमूल संहिता सजिल्द	२-५०

प्रो० नित्यानन्द वेदालंकार

पूर्व और पश्चिम	७-५०
जीवन की राहें	४-००
प्रार्थना दीप	२-००
सन्ध्या विनय	१-५०
सु-राज्य की रूपरेखा	०-५०

पं० भगवद्दत्त कृत

भारतीय संस्कृति का इतिहास	६-००
निरुक्त	१५-००
आर्य राजनीति के मूल तत्त्व	०-३०

पं० रामचन्द्र देहलवी कृत

देहलवी लेखावली	३-५०
ईश्वर ने दुनियाँ क्यों बनाई ?	०-४०

पं० आर्य मुनि कृत

ईश-उपनिषद्	०-४०
केन-उपनिषद्	०-५०
प्रश्न	०-७५
मुण्डक	०-३१
माण्डूक्य	०-६२
एतरेय	०-५०
तैत्तिरीय	१-२५

महात्मा नारायण स्वामी कृत

आर्य समाज क्या है	०-७५
वैदिक सन्ध्या रहस्य	०-३७
वैदिक यज्ञ रहस्य	०-३७

प्रो. सत्यभूषण योगी कृत

योगी की मधुशाला	१-००
योगी का वीर काव्य	२-५०
योगी का सोऽहं काव्य (ईशोपनिषद्)	५-२५

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती कृत

वेदों का महत्त्व	०-२५
बालशिक्षा	०-१५
धर्म शिक्षा	०-१०
ईश्वर प्राप्ति	०-१६
ईश्वर विचार	०-१२

धार्मिक चित्र और फोटो आदि

महर्षि दयानन्द रंगीन	१-२५
साइज़ २०×३०	
महात्मा हंसराज	१-००
पं० लेखराम	१-००
स्वामी दर्शनानन्द	१-००
पं० गुरुदत्त	१-००
साइज़ १८×२२	
महर्षि दयानन्द	०-७५
गुरु विरजानन्द	०-७५
स्वामी श्रद्धानन्द	०-७५
पं० लेखराम	०-७५
ला० लाजपतराय	०-५०
साइज़ १५×२०	

गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क, दिल्ली-६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वाध्याय उपयोगी पुस्तकें

मन की अपार शक्ति	प्रो० सुरेशचन्द्र वेदालंकार	१-२५
आकर्षक व्यक्तित्व कैसे बने ?	,,	१-५०
हम सुखी कैसे रहें ?	पं० सत्यपाल शास्त्री	१-००
महर्षि दयानन्द जीवन चरित्र	पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति	१-५०
महर्षि दयानन्द	त्रिलोकचन्द्र विशारद	०-७५
गुरु विरजानन्द	,,	०-५०
दयानन्द चित्रावली	रामगोपाल विद्यालंकार	२-५०
गो रक्षा परमकर्तव्य	पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड	०-५०
गीत भण्डार	पं० नन्दलाल	३-००
व्याख्यान माला	स्वामी अच्युतानन्द	२-५०
बृहदारण्यक उपनिषद् कथामाला	स्वामी ब्रह्ममुनि	३-००
श्वेताश्वतर उपनिषद्	पण्डित भीमसेन	१-००
विवाह और विवाहित जीवन	पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय	२-५०
स्त्रियों का स्वास्थ्य और रोग	पं० अत्रिदेव विद्यालंकार	३-००
दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह (उत्तरार्द्ध)	स्वामी दर्शनानन्द	२-५०
वेद परिचय	स्वामी वेदानन्द	०-३७
जीवन ज्योति	चमूपति एम० ए०	४-००
बाल ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	पं० विश्वनाथ विद्यालंकार	०-७५
आर्य सिद्धान्त दीप	पं० मदनमोहन विद्यासागर	१-२५
गीत श्रद्धाञ्जलि	(भजन)	१-००
महिला पुष्पाञ्जलि	,,	०-५०
हिन्दु संगठन	स्वामी श्रद्धानन्द	१-००
ओंकार व्याख्या	पं० अयोध्या प्रसाद	०-२०
नमस्ते की व्याख्या	पं० सुखदेव	०-२०
सत्य हरिश्चन्द्र नाटक	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	१-००
नास्तिकवाद	देवेन्द्रनाथ शास्त्री	०-५०

गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क, दिल्ली-६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारी प्रकाशित व प्रसारित पुस्तकें

महर्षि दयानन्द	त्रिलोकचन्द्र विशारद	०-७५
स्वामी श्रद्धानन्द	,,	०-३७
गुरु विरजानन्द	,,	०-५०
आदर्श सुधारक दयानन्द	देवेन्द्रनाथ मुखर्जी	०-६२
गुरुधाम एकांकी	चन्द्रनारायण सक्सेना	०-५०
गीतावचनामृत	विष्णुमित्र	०-३७
आर्यसमाज के नियमों की व्याख्या	स्वामी सत्यानन्द	०-५०
ब्रह्मचर्य जीवन	पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार	०-५०
वैदिक धर्म शिक्षा	पं० शिव शर्मा	०-२५
गोरक्षा परम कर्तव्य	पं० धर्मदेव वि० मा०	०-५०
आप क्या नहीं कर सकते ?	स्वेट मार्डन	१-००
चिन्तामुक्त कैसे हों ?	,,	१-००
हँसते-हँसते कैसे जियें ?	,,	१-००
जो चाहें सो कैसे पायें ?	,,	१-००
अपना खर्च कैसे घटायें ?	,,	१-००
अवसर को पहचानो	,,	१-००
अपने आप को पहचानो	,,	१-००
सिगरेट बीड़ी कैसे छोड़ें	नरेन्द्रनाथ	१-००
हँसना मना है	योगेन्द्र कुमार	१-००
ढोल की पोल	चिरंजीत	१-००
दो सौ स्मॉल स्केल इण्डस्ट्रीज़	रवि श्रीवास्तव	२-००
एक लाख नौकरियाँ	अरविन्द	२-००
स्वेतलाना	क्षितीश	२-००
मुझे याद है	विमल मित्र	३-५०
अष्टोत्तर शतनाम मालिका	विद्यासागर वेदालंकार	६-००
गंगोत्री दर्शन	महावीरसिंह गहलोत	४-००

गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क, दिल्ली-६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सरल, रोचक तथा कथाशैली में लिखी गई

महात्मा आनन्द स्वामी जी कृत पुस्तकें

तत्त्वज्ञान	३-००
प्रभुदर्शन	२-५०
प्रभुभक्ति	१-५०
घोर घने जंगल में	२-५०
उपनिषदों का सन्देश	१-५०
महामन्त्र	१-२५
मानव जीवन गाथा	१-००
भक्त और भगवान्	१-००
एक ही रास्ता	१-००
आनन्द गायत्री कथा	०-७५
बोध कथाएँ	३-५०
शंकर और दयानन्द	०-५०
सुखी गृहस्थ	१-००
सत्यनारायण व्रत कथा	०-७५

समस्त आर्य साहित्य प्राप्त करने का एकमात्र स्थान

गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली-६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ब्र० जगदीशविद्यार्थी विद्यावाचस्पति एम. ए. कृत

वेद सम्बन्धी

१. वेद सौरभ—१५० वेद-मन्त्रों की व्याख्या	२-००
२. वैदिक प्रश्नोत्तरी—(ब्रह्मोद्योपनिषद्) यजुर्वेद के २३वें अध्याय की व्याख्या	२-००
३. ईशोपनिषद्—यजुर्वेद के ४०वें अध्याय की व्याख्या	२-००
४. वैदिक उदात्त भावनाएँ—५२ विषयों पर वेदों पर आधारित निबन्ध	२-००
५. प्रार्थना प्रकाश—प्रार्थना के ८ मन्त्रों की व्याख्या	१-२५
६. प्रभात वन्दन—प्रातःकाल के ५ मन्त्रों की व्याख्या	१-२५
७. ऋग्वेदशतकम्—एक सौ चुने हुए मन्त्रों का संकलन	१-००
८. यजुर्वेदशतकम्— ,,	१-००
९. अथर्ववेदशतकम्— ,,	१-००
१०. सामवेदशतकम्— ,,	१-००
११. विद्यार्थी लेखावली—विविध सिद्धान्त विषयों पर १९ लेख	३-००
१२. कुछ करो कुछ बनो—प्रेरणाप्रद लेख	२-००
१३. विद्यार्थियों की दिनचर्या—प्रेरणाप्रद लेख	१-५०
१४. दिव्य दयानन्द—जीवन के विभिन्न पहलू	१-२५
१५. दयानन्द सूक्ति और सुभाषित—संकलन	४-००
१६. हास्यविनोद—चुटकुले	१-००

समस्त आर्य साहित्य प्राप्त करने का एकमात्र स्थान

गोविन्दराम हासानन्द, नई सडक, दिल्ली-६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कुछ श्रेष्ठ प्रकाशन

न्द्र देहलवीलेखावली—इस पुस्तक में पंडित जी की सभी तर्कें संगृहीत कर दी गई हैं। आरम्भ में उनकी जीवनी भी डित जी के दो फोटो भी हैं। मूल्य ३-५०

सूक्ति और सुभाषित—इस ग्रन्थ-रत्न में महर्षि के सभी विषयों पर सूक्तियाँ एकत्रित कर दी हैं। सभी विद्वानों ने इस रि प्रशंसा की है।

र्ता : ब्र० जगदीश विद्यार्थी एम० ए० मूल्य ४-००

संस्कृति का इतिहास—सृष्टि के आरम्भ से लेकर आधुनिक ीय संस्कृति किन-किन अवस्थाओं से गुजरी है इसका भली-ण किया गया है। यह ग्रन्थ यूरोपीय लेखकों की निराधार नाओं को मूल से खण्डित करता है। बड़े आकार में सुमुद्रित पुस्तक।

लेखक : स्वर्गीय पं० भगवद्दत्त रिसर्च स्कालर मूल्य ६-००

पूर्व और पश्चिम—लेखक : नित्यानन्द वेदालंकार एम० ए०

प्रस्तुत पुस्तक में पूर्व और पश्चिम के तत्वाज्ञान, धर्म, कला व संस्कृति का इन निबन्धों में सूक्ष्म एवं क्रमबद्ध विश्लेषण, विवेचन हुआ है। भारत के मूर्धन्य विद्वानों ने इस पुस्तक को सराहा है। बड़े आकार की सुमुद्रित व सजिल्द पुस्तक।

मूल्य ७-५०

जीवन की राहें—लेखक : नित्यनन्द वेदालंकार एम० ए०

इस पुस्तक में भारतीय संस्कृति के कुछ प्राचीन सिद्धान्तों को ही आज की सर्वसुबोध भाषा में कह कह दिया है। महर्षियों द्वारा अनुभूत जीवन की सचाइयों के प्रकाश में हम अपनी जीवन-राहें निश्चित कर सकें यही इस पुस्तक का उद्देश्य है।

मूल्य ४ ००

गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली-६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आगामी प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश

[सम्पादक स्व० पं० भगवद्दत्त रिसर्च स्कालर
का प्रकाशन आरम्भ हो गया !

इस संस्करण की विशेषताएँ

१. महर्षि की हस्तलिखित प्रति से मिलाकर छापा गया है
२. पैराग्राफों पर क्रम-संख्या ।
३. हर पृष्ठ पर उस पृष्ठ में आ रहे विषय का उल्लेख ।
४. अकारादि क्रम से प्रमाण-सूची ।
५. बढ़िया कागज, मोनो की छपाई, आकर्षक आवरण ।

—❀—

श्रीमद्दयानन्द प्रकाश

[लेखक : स्वामी सत्यानन्द सरस्वती]

जिस प्रकार सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर लोगों ने आर्यसमाज में प्रवेश किया इसी प्रकार ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है जो महर्षि के इस जीवन-चरित्र को पढ़कर श्रद्धा से आर्यसमाज में आये ।

इस ग्रन्थ को मोटे अक्षरों में बड़ी साइज में छापा जा रहा है ।

गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली ।

मुद्रक, प्रकाशक, विजयकुमार ने सम्पादित कर बदलिया प्रिंटिंग प्रेस,
दाईवाड़ा दिल्ली में मुद्रित कर वेदप्रकाश कार्यालय,
४४०८ नई सड़क, दिल्ली से प्रकाशित किया ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi